

रघुवीर सहाय के काव्य की सामाजिक उपादेयता**अनुष्टुप चंसौलिया**

शोधार्थी, विषय: हिंदी ,जीवाजी
विश्वविद्यालय,ग्वालियर (मध्य
प्रदेश)

ABSTRACT

रघुवीर सहाय जी ने देखा है कि समाज में ऐसे बहुत से लोग हैं जो आधुनिक बनने का ढोंग करते हैं, परन्तु आधुनिक नहीं होते। समाज को सही मार्गदर्शन देने की योग्यता रखने वाले लेखक भी लिखते समय मात्र आधुनिक बने रहते हैं, अन्यथा वे अपनी-अपनी जाति के दायरे में सिमट कर रह जाते हैं-

Paper Rceived date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

<https://doi.org/10.5281/zenodo.15384139>

"मधुर यौवन का मधुर अभिशाप मुझको मिल चुका था
फूल मुरझाया छिपा काँटा निकलकर चुभ चुका था
पुण्य की पहचान लेने, तोड़ बन्धन वासना के
जब तुम्हारी शरण आ, सार्थक हुआ था जन्म मेरा
क्या समझकर कौन जाने, किया तुमने त्याग मेरा
नीड़ में मेरी उमंगों के किया अपना बसेरा

हो गया गृहहीन सहज प्रफुल्ल यौवन प्राण मेरा ॥ "

कवि को ऐसे दोगियों से नफरत है जिनकी कथनी-करनी में अंतर होता है। लेखक प्रयत्न करके देखता है कि उसके समाज से बाम्हन - कायथ ठाकुर जैसी विषमताएँ मिट जायें, परन्तु वह सफल नहीं होता। आजादी के बीस वर्षों के बाद रघुवीर सहाय ने देखा कि कोई लेखक अपना उद्देश्य पूरा करके महान नहीं बन सकता है। भारत संघ बनने के पहले ही बाम्हनों और ठाकुरों में बँटा हुआ है-

मुख्यबिन्दु: आधुनिक, जन्म, त्याग, धर्मात्मा, ज्ञान, यौवन, कथनी-करनी आदि ।

रघुवीर सहाय समाज की इस दयनीय दशा को देखकर संवेदनशील हो जाते हैं। वे देखना चाहते हैं कि जातिवाद को समाप्त करने का नारा लगाने वाले नेताओं ने कौन से नेक कार्य किए हैं। इस

IMPACT FACTOR**5.924**



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

आधुनिक युग में भी ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जब कोई निम्न वर्ग का व्यक्ति प्यास बुझाने के लिए पानी माँगता है उसकी अवहेलना की जाती है। (1) कवि इसके बारे में जानना चाहते हैं-

बसन्त आया

जैसे बहन दा कहती है

ऐसे किसी बँगले के किसी तरु (अशोक ?) पर कोई चिड़िया कुऊकी

चलती सड़क के किनारे लाल बजरी पर चुरमुराये पाँव तले

ऊँचे तरुवर से गिरे

बड़े-बड़े पियराये पत्ते । (2)

कवि के अनुसार राष्ट्रीय एकता जैसे उन्नत विचारों को लेकर कोई एक व्यक्ति भी नहीं हैं। जब जातिगत विषमता को बनाये रखने की बात आती है सब एक हो जाते हैं। यह विषमता ऐसी हो गई है कि अब ये राष्ट्रीय आदेश सा लगने लगा है-

प्रभु की दया

बिल्ली रास्ता काट जाया करती है

प्यारी-प्यारी औरतें हरदम बक-बक करती रहती हैं।

चाँदनी रात को मैदान में खुले मवेशी

आकर चरते रहते हैं

और प्रभु यह तुम्हारी दया नहीं तो और क्या है

कि इनमें आपस में कोई सम्बन्ध नहीं । (3)



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

जब महासंघ के अध्यक्षों से समाजवाद के बारे में प्रश्न किया जाता है तो वे भी इस प्रश्न को टालने के लिए हँसकर अपनी तस्वीरें खिंचवाकर चुप हो जाते हैं- हम विचार करेगे, कहने के अतिरिक्त उनके पास कोई उत्तर नहीं होता-

धूप

देख रहा हूँ

लम्बी खिड़की पर रक्खे पौधे

धूप की ओर बाहर झुके जा रहे हैं

हर साल की तरह गौरैया

अबकी भी कार्निंस पर ला लाके घरने लगी है तिनके

हालाँकि यह वह गौरैया नहीं

यह वह मकान भी नहीं

ये वे गमले भी नहीं, यह वह खिड़की भी नहीं

कितनी सही है मेरी पहचान इस धूप की ।

जन प्रतिनिधि या नेता और पत्रकार भी जनता की जातिगत विसंगतियों को दूर करने का प्रयास नहीं करते। समाज में ऐसे लोगों की भरमार है, जिसकी कथनी-करनी में अंतर होता है। ऐसे लोग निरीह जनता को धोखा देते हैं। रघुवीर सहाय जी ऐसे लोगों से सचेत रहने की सलाह देते हैं। ये जब शासक बन जाते हैं तो जनता को संकट कालीन परिस्थिति का सामना करना पड़ता है। ये शासक दिखने में निर्भीक लगते हैं, परन्तु वर्षों तक अपने पाखंड द्वारा जनता को धोखा देते रहते हैं।

"पसीने से गन्धाती जाये घर का माल मैके पहुँचाती जाये

पड़ोसिनों से जले

कचरा फेंकने को लेकर लड़े

घर से तो खैर निकलने का सवाल ही नहीं उठता

औरतों को जो चाहिए घर ही में है ॥ (4)

सबसे बड़ी विडंबना यह है कि गाँधी जी के शिष्य बनने की बात करने वाले कुछ लोग अहिंसा का मार्ग छोड़कर हिंसा का प्रचार करने लगे हैं-

लाखों का दर्द

लखूखा आदमी दुनिया में रहता है

मेरे उस दर्द से अनजान जो कि हर वक्त

मुझे रहता है हिन्दी में दर्द की सैकड़ों

कविताओं के बावजूद

और लाखों आदमियों का जो दर्द में जानता हूँ

उससे अनजान

लखूखा आदमी दुनिया में रहे जाता है। ॥ (5)

समाज की बागडोर ऐसे शासकों के हाथ में है, जो दोहरा व्यवहार कर रहे हैं। जनता इनको देखकर सोचती है कि ये लोग जनता की भलाई करते हैं, वास्तव में ये भलाई का मुखौटा पहनकर अपना क्रूर रूप छुपाकर अपना स्वार्थ पूरा करते हैं। इनके पास चापलूसी खुशामदी करने की कला होती है, जिससे वे अयोग्य होकर भी ऊँचे-ऊँचे पदों पर आसीन होकर जनता के रक्षक बनने का ढोंग करते हैं। यह प्रवृत्ति निचले दर्जे के कर्मचारी से लेकर ऊँचे दर्जे के कर्मचारी में मिलती है -



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

दे दिया जाता हूँ

शाम को सूरज डूबेगा

दूर मकानों की कतार सुनहरी बुन्दियों की झालर बन जायेगी

और आकाश रंगारंग होकर हवाई अड्डे के विस्तार पर उतर आयेगा

एक खुले मैदान में हवा फिर से मुझे गढ़ देगी

जिस तरह मौके की माँग हो

और मैं दे दिया जाऊँगा ॥

रघुवीर सहाय के अनुसार व्यक्ति समझता है कि वह किसी के सामने अपने कार्यों का आदर्श प्रस्तुत कर रहा है, परन्तु वह आदर्शात्मक कार्य किये बिना आदर्श प्रस्तुत करना चाहता है। यहाँ एक पुरोहित है जो चाहता है कि उसके प्रार्थना घर में कोई विज्ञापन न चिपकाये परन्तु सबसे पहले वही विज्ञापन चिपकाता है।

रचता वृक्ष

"देखो वृक्ष को देखो वह कुछ कर रहा है

किताबी होगा कवि जो कहेगा कि हाय पत्ता झर रहा है।

रूखे मुँह से रचता है वृक्ष जब वह सूखे पत्ते गिराता है

ऐसे कि ठीक जगह जाकर गिरे धूप में छाँह में

ठीक-ठीक जानता है वह उस अल्पना का रूप

चलती सड़क के किनारे जिसे आँकेगा



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

और जो परिवर्तन उसमें हवा करे उससे उदासीन है ॥" (6)

छद्म व्यवहार करने वाले नन्हीं सी लडकी को धोखा देने से भी नहीं कतराते। जब वह हाथ पसारकर कुछ माँगती है तो आश्वासन देते हैं कि आज के दिन को याद रखना। हम अवश्य कुछ न कुछ देंगे। उस समय मसीहा बनते हैं। परन्तु घर पहुँचकर अपनी दैनंदिनी के पन्ने पलटते ही सुबह के सारे वादे भूल जाते हैं-

आज फिर शुरू हुआ

आज फिर शुरू हुआ जीवन

आज मैंने एक छोटी-सी सरल-सी कविता पढ़ी

आज मैंने सूरज को डूबते देर तक देखा

जी भर आज मैंने शीतल जल से स्नान किया

आज एक छोटी सी बच्ची आयी, किलक मेरे कन्धे चढ़ी ॥

आधुनिक युग में अपने आपको आधुनिक बताने का ढोंग करने वाले बहुत सारे लोग हैं। इस के लिए भले वे अपनी पैतृक भूमि को भूल भी जायें तो कोई फरक नहीं पड़ता। गाँवों में रहने वाले आधुनिकता के मोह में स्वयं को महानगर से जोड़कर छद्म व्यवहार करते हैं-

नारी

नारी बिचारी है।

पुरुष की मारी है

तन से क्षुधित है

मन से मुदित है



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

लपककर झपककर

अन्त में चित है ॥

कला भी इस छद्म व्यवहार से अछूती नहीं रह गई, बड़े-बड़े उपन्यासकार मानव जीवन को समग्रता से जानने का ढोंग करते हैं परन्तु भूखे बालक की खाली कटोरी को समझ नहीं पाते-

हमने यह देखा

यह क्या है जो इस जूते में गड़ता है।

यह कील कहाँ से रोज़ निकल आती है

इस दुःख को रोज़ समझना क्यों पड़ता है ॥

ऐसे ही चित्रकार अपनी तस्वीर को ऊँचे दामों में बेचने के लिए अकाल की रंगीन तस्वीर बनाकर बेचते हैं इसलिए रंग बनाने और बेचनेवाले अपने चित्रकार लेकर आते हैं।

इसी प्रकार रंगीन टी वी की दुनिया में बंजर भूमि भी हरी और सुनहली दिखती है। रामसूरत जैसे निरीह लोग इस प्रकार की नकली दुनिया को देखकर भौंचके रह जाते हैं-

नयी हँसी

महासंघ का मोटा अध्यक्ष

घरा हुआ गही पर खुजलाता है उपस्थ

सर नहीं,

हर सवाल का उत्तर देने से पेशतर

बीस बड़े अखबारों के प्रतिनिधि पूछे पचीस बार ॥

इस प्रकार रघुवीर सहाय जी ने देखा कि समाज के कोने-कोने में छद्म व्यवहार करने वाले लोग समाज का शोषण कर रहे हैं। स्वतंत्रता के पश्चात समाज को तीव्र रूप से क्षुब्ध करने वाली समस्या है- पारिवारिक विघटन। रघुवीर सहाय ने इस समस्या को महसूस किया। उन्होंने पारिवारिक विघटन के कई उदाहरण बताये हैं। रोजगार, पारंपरिक मूल्यों के प्रति अनिच्छा, एकल परिवार का मोह, संपत्ति को निवेश करके रखने की लालसा, प्रतिस्पर्धा आदि अनेक कारण हैं जिससे पारिवारिक विघटन विकराल समस्या बनी हुई है। रघुवीर सहाय जी ने व्यक्ति के जीवन में परिवार को विशेष महत्व दिया है, ऐसे में पारिवारिक विघटन की विसंगति से विचलित हुए विना वे कैसे रह सकते थे।

रघुवीर सहाय ने देखा कि युवा पीढ़ी अपने पूर्वजों के सामर्थ्य से समृद्ध और शक्तिवान बनती है, परन्तु अपने पूर्वजों का सम्मान नहीं करती। उनके पूर्वज किन कठिनाइयों का सामना करके आगे बढ़े हैं, उसके प्रति ध्यान नहीं देते। अपने पूर्वजों को असहाय छोड़ देते हैं। उन्हें अपनी तरह उच्च श्रेणी का न मानकर दुत्कारते हैं।

जब युवा पीढ़ी अपने माता पिता की उपेक्षा करती है तो उनकी दशा दयनीय हो जाती है। परन्तु माता पिता को हर क्षण ये आभास होते रहता है कि उनके बच्चे उनके आस पास रहकर उनका खयाल रख रहे हैं। परदेस चले जाने वालों को भी अपने आस-पास खोजते रहते हैं। उनके संवाद सुनने की इच्छा रखते हैं। हर आहट से उन्हें लगता है कि उनके पुत्र ही हैं लेकिन ऐसा कुछ नहीं होने वाला है, जीवन का खेल खत्म हो जाएगा, परन्तु उनकी संतान बुलाने पर नहीं अपनी मर्जी से आएगी।

वास्तव में बच्चों के मन में माता-पिता से मिलने की इच्छा ही नहीं होती, अतः वे समय निकालना ही नहीं चाहते। माता छिप छिप कर रोती रहती है और पिता उसे सांत्वना देते रहते हैं। परदेस जाने वाले लड़के लौटकर आते ही नहीं हैं और उनके पिता का स्वप्निल परिवार बिखर जाता है। रघुवीर सहाय के काव्य में आधुनिक समाज का सत्य पाठक को सोचने के लिए मजबूर कर देता है। यही उनके काव्य की सार्थकता है।



International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संदर्भ सूची

1. शर्मा सुरेश, प्रतिनिधि कविताएँ रघुवीर सहाय (आओ, जल भरे बरतन में), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2023, पृ. 20
2. शर्मा सुरेश, प्रतिनिधि कविताएँ रघुवीर सहाय (बसंत आया), राजकमल, प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2023, पृ. 24
3. शर्मा सुरेश, प्रतिनिधि कविताएँ रघुवीर सहाय (प्रभु की दया), प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2023, पृ. 28
4. शर्मा सुरेश, प्रतिनिधि कविताएँ रघुवीर सहाय (हमारी हिन्दी), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2023, पृ. 40
5. शर्मा सुरेश, प्रतिनिधि कविताएँ रघुवीर सहाय (लाखों का दर्द), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2023, पृ. 44
6. शर्मा सुरेश, प्रतिनिधि कविताएँ रघुवीर सहाय (रचता वृक्ष), राजकमल प्रकाशन प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2023, पृ. 42